

[illegible]

११५ कतिपयं प्रतीति अगस्त्ये प्रतीति दोगति

गुणगोपनीयं
 गुणगोपनीयं
 गुणगोपनीयं
 गुणगोपनीयं

उं आकाशतत्त्वाय ॥ आवाहनादि ॥ ॥ ॥ कलमपूजनं ॥ उं बुद्धाय ॥ उं विष्णवे ॥
 ब्रह्माय ॥ गंगाय ॥ जमुनाय ॥ सतस्वये ॥ गङ्गाय ॥ कोनिके ॥ जाद्वये ॥
 नर्मदाय ॥ सफसागत्रये ॥ मार्कण्डेय ॥ लानदाजाय ॥ जेतमाय ॥ वसि
 ष्ठाय ॥ रुद्राय ॥ उमदग्न्याय ॥ विश्वामित्राय ॥ सफमषिण्या ॥ आनं ॥ शुद्ध
 स्फुटिकां कां गं विनयचन्द्रमोलिकं । वनदारुयुद्धसं मृदामालाधनं ॥ च व
 आत्मा महादेवं ॥ ॐ स्वकामार्थसिद्धये ॥ आनयुष्ये नमः ॥ ॐ श्रवस्वस्व ॥ उं वलयय ॥
 व्यासाय ॥ हनुमते ॥ विहीषणाय ॥ रुपायामाय ॥ पशुनामाय ॥ मार्कण्डेय ॥
 अष्टविर्नजीवये ॥ श्रीमहर्षिजाय ॥ अमृतीश्वराय ॥ महालक्ष्मीमहिता
 यनमः ॥ ॐ पूर्णकलमाय ॥ आवाहनादि ॥ ॐ गङ्गाय ॥ गङ्गाय ॥ कोमात्री किम्ब
 वा गङ्गायामास ॥ ॐ ॥ विष्णुयध्वं दानं ॥ स्नानं ॥ पावनं सर्वे तीर्थानां गङ्गा

दिसफसागना ॥ स्नानं प्रकल्पितं दर्वं सलिले ॥ स्नापयाम्यहं ॥ ॥ वसुं ॥ दिवांगवसु
 संक्षिप्तं नानां ॥ गङ्गाय ॥ गङ्गाय ॥ ॐ देवसु प्रदानं प्रीयतां प्रमथन् ॥ ॥ चन्दनं ॥
 चन्दनादिसुगन्धार्द्रं कस्तुरीसहवासिनं । रुक्मायकल्पितं देवतवार्थमधुसूदनं ॥
 ॥ ॥ सुगन्धे चन्दनं ॥ अगुत्रं ॥ कंकम ॥ श्वेव कर्णनक्षत्रमन्त्रितं । मलयजं समयू
 कं मिदं गन्धं विलयनं ॥ ॥ अदत्तं ॥ अदत्तं ॥ अदत्तं ॥ अदत्तं ॥ अदत्तं ॥ अदत्तं ॥
 ॐ धितं मवर्तदहि यत्र च यत्र गतिं ॥ ॥ मिदूत ॥ वीर्यं च नमहावीर्यं वीर्यं
 लसेमन्त्रितं । विहृतिचै गृहाणत्वं जगत्वीर्यं वन्दनं दद ॥ ॥ अहापवीत ॥ कथां सेक
 तस्यै सुखातं प्रियुषीकृतं । गृहाण्युषुनीकां रुक्मिणीवद्वनं मया ॥ ॥ तास्वां मा
 लास्वां ॥ कोलाचिनं यथापूर्वं यच्च वरुणसुगन्धिः ॥ विविधं यथा मालां गृहाण्यप
 नमश्च ॥ ॥ गुलजी ॥ गुलम्भमृगनामानि सदात्वं केन वपिय । केन वार्थं विचिन्वति

गङ्गायामास
 गङ्गायामास
 गङ्गायामास
 गङ्गायामास

नि नि काय
ग्री सू यो ग

[illegible]

किमहाह क्का मुक्तिं तेषां कश्चिन्नुता ॥ ॥ इध नखा ॥ चषधूत न कं पृष्ठा नि संधा पूजि
 त ४ मिर्व । सु । गेल क य दान न निवला के महीयते ॥ ॥ एमपटको ॥ लिं ग च यति
 माया च पृष्ठा म के न पूजयते । कल्य काटि सद ग्राहि निवला के महीयते ॥ ॥
 धू क स्वां ॥ धू च पूष्य सद ग्राहि धू क पूष्य म तानि च । तेन दान न न द व ग नूड ला
 के महीयते ॥ ॥ अयामा र्ज स्वां ॥ अयामा र्ज सद ग्राहि अयामा र्ज म तानि च । तेन
 दान न न द व ग तव कामा ध सिद्धये ॥ ॥ त्रय क म न स्वां ॥ कू क मा र्ज य व र्ण च क द मे
 न च ता रु ति । अलि प्य रु क्का नो अ नु क ल्य काटि व स दि वि ॥ ॥ अ न पा न स्वां ॥ अ न
 प न नि षा द च सु व र्ण ये ल स य तं । दु र्ग र व ति रा अ नु गृ हा ण य न म श्रु ने ॥ ॥
 च व ल स्वां ॥ कू मू द पूष्य सद ग्रा कू मू द पूष्य म तानि च । तेन दान न न म द व नूड ला
 के महीयते ॥ ॥ माल ती स्वां ॥ माल ता नि च स चो ति माल ता नि म तानि च । तेन दान न

३ स व द य ष पु नो ल न

न म द व निवला के महीयते ॥ ॥ रु सि व ॥ पृ ष्ठा पूष्य सद ग्राहि कल्य काटि वि जि
 श्यते । तेन दान म या द र्ग गृ हा ण य न म श्रु ने ॥ ॥ च प स्वां ॥ च प पूष्य सद ग्राहि च
 प पूष्य म तानि च । तेन दान न न म द व वा ॥ ॥ रुं ग रा ज स्वां ॥ अ य स र्व पा वि नि मू क सो पा
 मा र्ज य ता च ना धि क रु ल वि षू ला क निवला के महीयते त्व काम च रि ४ रुं ग रा ज प र ॥
 रुं ग रा ज नि र्व ब र्च यि शी ॥ ॥ अ व ल रु ल ॥ अ जी य रु स रु ग्रा हि अ जी य पूष्य म तानि च ।
 तेन दान न न म द व निवला के महीयते ॥ ॥ क न वी न स्वां ॥ क न वी ना क म द्या न वि
 ल य श ल्का नि च । ना ना पूष्य वि वि श्रा ति शे च्छ ती प न म श्रु ने ॥ ॥ कू मू द स्वां ॥ प ला
 म पूष्य सद ग्रा कू मू द पूष्य म तानि च । तेन दान न न म द व नूड ला के महीयते ॥ ॥
 प द्र स्वां ॥ प द्रा की प द्य मा र्ज न प द्र पूष्य प ना व न । गृ हा ण त्वे म हा दे व पृ ष्ठा पूष्य
 न मा रु ते ॥ ॥ उ रु ल स्वां ॥ नी ला त्प ले द लं पूष्य म क न स्या ति व ले र्ग । स र्व पा य

विनिर्मुक्तः निवलाकमहीयत ॥ ॥ धंवास्वा ॥ पविशाम् पविशस्व मदनाम् स
मुरुवः । गृहोदवदवम दमनयति गृह्णतां ॥ ॥ गृतायुवि ॥ इवो केलीचसं प
रं वनयुष्याति । अरुनः । देवदवमदमाय गृह्णतां मंगलात्मनः ॥ ॥ दाक्रासतां
धूप ॥ सुगन्धमिश्रितं धूपं शालानं सर्वदेवता । मयारुकिहर्तुं देव माद्यान्पन
मयन ॥ ॥ दीपं ॥ त्वमादिदेवता । सर्वं तज्जुष्यतिष्ठिता । तमेष्टुकायसं
सात्र यथादीपं प्रकाशितं ॥ ॥ नवय ॥ नवयं गृह्णतां देव रुकिमन्वचलाकु
न । ॐ मितां मवन् दहि यत्रुचपनागति ॥ ॥ माधि ॥ लङ्क प्रपदाय सु
तिसः रुलि सादिरि । रुनिकलितराय सु यका नैयुति गृह्णतां ॥
सि सौ वृतादका ॥ षड्विंशकदायीच ॥ जीवीनवीजपनका । केदनीपनसा

यसु श्रावकायति गृह्णतां ॥ ॥ ग्वाल ग्वय ॥ पाताल तल संहर्तुं वदनां
राजहृषी । नानागुह्यसमायुक्तं तां वलं प्रतिगृह्णतां ॥ ॥ नृध ॥ नृध
वा ना हाक ल्यादि ॥ सर्वे ता य समा दाय पूष्य चरुल चंदन । जानसी ध
नधी गत्वा गृहाणां च नमासुते ॥ ॥ मउल देयके ॥ जयः ॥ काय ॥
विष्णुया ॥ नृनयं वामनं कृष्णं देवकं पुत्रधारुम । वासुदेवं हवीकं माधवं
मधुसूदनं ॥ वतार्दं पूजुत्रीकादी नृमिहं देत्यसूदनं । दामादनयद्यनारु
केशवंगवृद्धधर्ज ॥ ॥ गविन्दु मयु गं कृष्ण मननामयगात्रिण । नृध कर्जं ज
गदीजं सुगं लिखनका नका ॥ गिलोकं गं जगदीशं कृष्णवर्णं विविक्रमं ।
नाना यनं च उवाचं गं खचक्र गदाधरं ॥ पीताम्बरधरं निर्जं वनमाला
विरुषितं । नामायतानि सत्कृत्यं ॐ मितां यायुयान्नग ॥ ॥ पादिमादिदेवदवम

॥ ३८ ॥

सूर्य
दीप

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ स्तुत्यादि ॥ न्यास ॥ नृसिंहाय नमः ॥ हनुमते नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ म
होका लाय नमः ॥ हृदि नमः ॥ गणेशाय नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ स्कन्दाय नमः ॥ श्री
गणेशाय नमः ॥ महादेवाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ यथा मनो
य ॥ हृदयादि श्रोत्रादिनादि ॥ ॥ प्रणिमोष्टु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अष्टांगना
य ॥ मित्राव नमः ॥ नागपुत्र ॥ लापा मूढाय ॥ अष्टांगनाय ॥ वास
य ॥ हनुमदाय ॥ गौतमाय ॥ विष्णवे नमः ॥ जगद्विनाय ॥ भाव
य ॥ मूलस्थाय ॥ कात्यायनाय ॥ वसिष्ठाय ॥ मनीषाय ॥ कृष्ण
य ॥ कामपुत्राय ॥ नृसिंहाय ॥ मन्त्रालयाय ॥ ला
य ॥ दक्षिणाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हृदयादि ॥

नमः ॥ अगस्त्य मुनि सादृत्यं तज्जानामि महामुने । वृद्धमास न गृह्णाया अगस्त्ययन
 मानम ॥ ॥ तत्ता श्रानं ॥ वृं अगस्त्य मुनि सादृत्यं देहि क्षति मृत्कृति तं । वृं कृत्य
 धनागस्त्य चतुर्द्धा द्रुमहादनी । केमलुतु श्रुतु उं देधु पाणि वन युद । कृष्णा जिने
 या गपहं सुचालं को नरु धितं ॥ अकृव मुध न देव कुरु या नि समुद्र व । एवम निव
 ध्यात्वा सर्व काम रुतु पदं ॥ हृदयादि आवाहनादि ॥ ॥ धियां गति ॥ ३ ॥ अगस्त्य मु
 नि सादृत्यं तज्जानामि महामुने । वृं मां मया कृता पूजा गृह्णा अमुनि पूंगव ॥ हृदयादि
 आवाहनादि ॥ ॥ मार्कण्डेय २ः ॥ लावहा जाय २ः ॥ गणमाय २ः ॥ वज्रिषाय २ः ॥ रुं
 गव २ः ॥ यमदय २ः ॥ विश्वामित्राय २ः ॥ आदिपदि नव गृहस्था २ः ॥ ॥ प्रतिपदा
 दि पञ्चदशति धिस्था २ः ॥ अग्निनादि अष्टाविंशति न कृत्वा २ः ॥ विष्णुनादि सप्तविं
 शति न कृत्वा २ः ॥ मयादि द्वादशति न कृत्वा २ः ॥ इन्द्रादि दशति न कृत्वा २ः ॥ अनना

कनूद पद्मार्णवः। मुनिनामसदाधियः। तस्मिन्नावसनायुक्तं कर्म

पूजा ॥ ॥ धूप ॥ धूपार्थं सर्वद्वारानां मङ्गलं गन्धनिर्गन्धं सुकृतां सर्वशिवन प्रीय
 तं कृष्णं संस्तुवा ॥ ॥ दीप ॥ कोसवर्तितं रत्नं दीपं युगपूर्वसमस्तकालं चतुर्थांशं
 च नोदव गृह्यतां पापनाशनं ॥ ॥ धूप ॥ सिद्धान्तं विविधं शर्वं प्राप्तं दैवैव
 र्द्धनं । इदं यानन्दकारित्वं मनोरथं प्रीतिगृह्यतां ॥ ॥ रुत ॥ रुतं विविधं सर्वं शर्वं
 मन्त्रेण । मन्त्रमूलं । गुरुनाथ गृहानन्दं मन्त्रादभनदुद्धव ॥ ॥ माहि ॥ अथ
 पारम्पर्यनादं यो यत्तत्तत्तन्नामचिता । गृह्यतां दीपार्थं नाथ पत्रगृहचुम्बसर्व
 ॥ ॥ गृह्य गृहल ॥ गृह्य अत्र हवर्षं गृह्य वदनादलकारकं । गृहानसर्वलं को
 नां प्रियतां वृत्तमूलं ॥ ॥ अथ विद्य ॥ अगस्त्य भक्तिमयं कौं गृहानमन्त्रिणं
 व । गृह्यामसहिर्तं कौं गृह्यादुर्वीयवाक्यं । रुतवन्दनं ग । अर्थं वृधार्थं प्रीति

पानादित । कारिकविद्युता आस्त्य प । वाक्यमात्रकं ॥ चर्व आत्माग । क्षमा सर्वं सर्व
 वानग । शर्व । नाना रुत हसंयुक्तं आयमानरुत लपुदं ॥ अनपर्वानम ॥ ॐ ग
 लपतय ॥ ॐ विधु श्वनाय ॥ ॐ चकदनाय ॥ ॐ मृषवाहनाय ॥ ॐ लंवा
 दनाय ॥ ॐ गजुतकाय ॥ ॐ पत्रशुद्धसाय ॥ ॐ सिद्धि विनायकाय ॥ ॐ
 गंगामुताय ॥ ॐ पावती हृदयाय ॥ आवाहनादि ॥ ॥ गेत्री पूजनं ॥ अथ
 भक्तय ॥ ॐ नूननासनाय ॥ ॐ सुन्दराय ॥ ॐ नालासनाय ॥ ॐ पद्मासना
 य ॥ ॐ पद्मासनाय ॥ ॐ कमलासनाय ॥ ॐ कर्णिकामनाय ॥ ॐ यद्मास
 नाय ॥ ॐ ॥ ॐ दूर्वाकाष्ठानिरादवि सर्वलं हवर्षिणा । गंका नस्य प्रिया देवी
 रगन्ता ता मित्रा मता ॥ सर्व गोत्री मङ्गलानी सर्व सिद्धि प्रदायनी । सदा कावधव

ASHA ARCHIVES ~~3225~~
3235

3235

3235

[illegible]

ॐ नारायणाय वाग्वि स हि ताय २ ॥ ॐ माधवाय कान्ति स हि ताय २ ॥ ॐ गविन्दाय
क्रिया स हि ताय २ ॥ ॐ विष्णवे नमः स हि ताय २ ॥ ॐ स भू स द नाय धृति स हि ताय २ ॥
ॐ शिवि क माय ॐ स्वा स हि ताय २ ॥ ॐ वामनाय प्रीति स हि ताय २ ॥ ॐ श्री धनय नति
स हि ताय २ ॥ ॐ हृषीकेशाय माया स हि ताय २ ॥ ॐ पद्मनाभाय धी स हि ताय २ ॥ ॐ
दामोदराय महिमा स हि ताय २ ॥ ॐ श्री गुरुभ्यो नमः स हि ताय २ ॥ श्री वा ह
नादि ॥ ॥ गद्य पद्य युजन ॥ ॐ गद्य पद्य २ ॥ ॐ गुरुभ्यो २ ॥ ॐ दामोदराय २ ॥
ॐ देवपालाय २ ॥ ॐ श्री धनय नति २ ॥ ॐ श्री नारायणाय २ ॥ ॐ स्वप्नाय नाराय २ ॥
ॐ नारायणाय २ ॥ ॐ पद्मनाभाय २ ॥ ॐ पद्मनाभाय २ ॥ ॐ केशवाय नाराय २ ॥
ॐ कर्णिकार्याय २ ॥ ॐ मृगाय नाराय २ ॥ ॐ श्री ॥ शिव नारायण स्यात् सर्वभूतहिते रतः ॥

五

अस्मिन्नुत्सवा ॥ अग्निनरुद्रा ॥
 अस्मिन्नुत्सवा ॥ अग्निरुद्रा ॥
 अस्मिन्नुत्सवा ॥ अग्निरुद्रा ॥
 अस्मिन्नुत्सवा ॥ अग्निरुद्रा ॥
 अस्मिन्नुत्सवा ॥ अग्निरुद्रा ॥

[illegible]

ॐ लक्ष्मी नमः॥
ॐ विष्णु नमः॥

ॐ श्री भवतलक्ष्मी भवतन्मोद
लक्षणं दास्ये नक्षत्राणि दूय
मध्वेति द्वा रे भः ॐ बु नि वा
दा॥ नमः ॐ वा वा सर्वलोके म
ॐ वा वा ॥

ॐ ध्वनसि धूर्ध्व धूर्ध्व नै धूर्ध्व नै ध्या
स्मा धूर्ध्व निर्गं धूर्ध्व यं वयं धूर्ध्वो
मः ॥ ॥ इदं यमनकृष्णं
दाय ॥ ॥ अन्विदं दृष्टिं या ॥
उं कण्ठस्य ध्यानि नसि कण्ठस्य
नादि नसि ॥ माहादि ० सीन्मा
मादि ० सी ॥ २ ॥ आधिक्य ॥
उं ग र्शो क्रम्य वधानी ग र्शो द्वन
स्य गीर्णा ॥ ग र्शो विभ्यस्य हन
स्यानेन ग र्शो इन्द्रया मसि स्वाहा
॥ ग र्शो ध्याने ॥

० रुदं रुदं सु रुदं ० शुनमिह
 भाक्याभावं यद्रुद्रगमिन्द्र
 सगितामववाधिविन्द ॥
 अवादनार्थं ॥
 हुं धवस्य वै नि ॥
 नृक्षकपी ॥
 हुं ॐ धवै नि ॥ ॥ अलोदननी ॥
 हुं सुविश्वं वै नि ॥
 रुद्रवधस्यै नमः ॥
 हुं यविश्वं वै नि ॥
 यविश्वं वै नि ॥ ॥ नि ॥
 हुं गङ्गास्यै नि ॥ ॥ गङ्गास्यै नि ॥
 गङ्गास्यै नि ॥ ॥ गङ्गास्यै नि ॥
 यद्वै यद्वै ॥ गङ्गास्यै नि ॥
 यीत्वा सुवर्मा अयनि किरी ॥
 धाकपी ॥ यद्वै यद्वै ॥
 हुं देवीनाम् ॥ ॥ यिमाक्षिनी ॥
 हुं यमा ॥ ॥ ॥ समक्षदन्तरी ॥

हुं दवावशसुविनिगदिनध्या
 लिष्टयगिनाङ्गवैद्विधध्याधि
 ना ॥ ॥ गङ्गास्यै नि ॥
 जिवावश ॥ ॥
 हुं ॐ धवै नि ॥
 अग्निमुकुल्यादधि नि ॥
 वन्यार्थं यगवर्षं ॥
 हुं प्रवदन्ता अस्मानकाक्षि
 खदिषद ॥ ॥ कर्णोष्णवृक्षमि
 हुं अद्वाधिद्विनिमूर्धमाना
 अस्मानाश्मन्तः स्वध्यावन
 कि। यनायना निवृत्ता अरु
 न्यानिष्ठा अकाव्यध्यायस्मा
 अग्नि ॥ ॥ कर्णोष्णवृक्षमि
 हुं गङ्गास्यै नि ॥ ॥ गङ्गास्यै नि ॥
 दानमभ्यस्य अहिदत्तनी
 स्वसन्ध्याधनव ॥ ॥ गङ्गास्यै नि ॥
 नैवामर्षं ॥ ॥ अग्निवयवनी ॥
 हुं गङ्गास्यै नि ॥ ॥ गङ्गास्यै नि ॥

धृष्टं वपय जनमसि ॥

धृष्टा मनम ॥

धृष्टकादृष्टं वलनरुर्न द्वे क
वीमिदमरुर्न द्वलनरुर्न द्वे क
यमनि धृष्टायममस्थानि वर
नंदमरुर्न द्वलनरुर्न द्वे क
यमसमानायममस्थानि
वरानंदमरुर्न द्वलनरुर्न द्वे क
यमि यमसमवधुर्न मसव
धुर्न वरानंदमरुर्न द्वल
नरुर्न द्वे क
यमि यमसजाना
यमसजाना नि वराना वर
किनामि ॥

धृष्टकादृष्टवधु नम ॥

धृष्टि न धावधुर्न वधुर्न
धुर्न उ नम द्विर्न ॥ वधुर्न
धुर्न याल धुर्न उधुर्न वधुर्न
वधुर्न गी धावधुर्न जाना वधुर्न
धुर्न म न धुर्न गमिनी म ॥
ल धुर्न धुर्न न ॥ ॥ धुर्न धुर्न

नम साधु धुर्न वधुर्न सवित्रसुध
सुध धुर्न धावधुर्न ॥ धावधुर्न धुर्न

धृष्टा धुर्न धिधु सत्यर्नि ननरु

काका सधुर्न ग ॥ ॥ काका धुर्न

धुर्न धुर्न धावधुर्न धावधुर्न

मन ० समिधु मदि ॥ धुर्न स

नावधु सधुर्न ० सधुर्न सधुर्न

सधुर्न सधुर्न म ॥ धावधुर्न

दधुर्न नमदधुर्न म ॥ धावधुर्न

धिधु धावधुर्न सिर्न धावधुर्न

य ॥ ॥ धावधुर्न धावधुर्न

धुर्न मगधुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न मगधुर्न मगधुर्न मगधु

मम धुर्न धावधुर्न धावधुर्न

मदधुर्न मगधुर्न मगधुर्न

धुर्न धुर्न धुर्न ॥

धुर्न धुर्न धुर्न दिवधुर्न क

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

धुर्न धुर्न धुर्न मगधुर्न मगधु

हुं नमः वाचसपि वक्ता प्रथमः
 देव्या विषयः ॥ अर्वाभ्यस्यार्थः
 मयि स्मर्त्तुं यत्तु यान्ता यन्ता
 योऽयनासुव ॥ ॥ वलियदानं ॥
 हुं कृष्णादमर्त्यिदं हि ॥ मिदं
 यमनामकं कुरु विद्यदाकं ॥
 हुं वायमिगतजागर्थं दं
 यथा रुर्वावकुरुयजानन ॥
 कथादानं मयि विलयः ॥
 अर्वागि ॥ कथादानं यस्यां
 वाचसपि ॥ तिलाकृषिं यगाद्वर्ति
 ति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मयि नमः कर्त्तुं ॥ अर्वासम
 र्वागज ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कं कृष्णनलनयं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 हुं अर्वाभिधिः यवमानं दया
 उच्यते यथा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कर्त्तुं मयि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कर्त्तुं नमः कर्त्तुं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 हुं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गणा अर्वाभिधिः ॥
 हुं नमः विनयः सामग्र्यं दं
 कानि यथाभाजागवदाः ॥ अर्वा
 मयि स्मर्त्तुं यत्तु यान्ता यन्ता
 योऽयनासुव ॥ ॥ वलियदानं ॥
 हुं कृष्णादमर्त्यिदं हि ॥ मिदं
 यमनामकं कुरु विद्यदाकं ॥
 हुं वायमिगतजागर्थं दं
 यथा रुर्वावकुरुयजानन ॥
 कथादानं मयि विलयः ॥
 अर्वागि ॥ कथादानं यस्यां
 वाचसपि ॥ तिलाकृषिं यगाद्वर्ति
 ति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मयि नमः कर्त्तुं ॥ अर्वासम
 र्वागज ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कं कृष्णनलनयं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 हुं अर्वाभिधिः यवमानं दया
 उच्यते यथा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कर्त्तुं मयि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कर्त्तुं नमः कर्त्तुं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 हुं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अभिषेकसभादिवासविषयानु
नक्रमः ॥ अभिषेकसूक्तम् ॥
वदुर्ध्वदिपूजानम् ॥

शरददाय ॐ दमासनन्नमः॥
 यद्रुद्धदाय ॐ दमासनन्नमः॥
 रामर्द्धदाय ॐ दमासनन्नमः॥
 अशर्द्धदाय ॐ दमासनन्नमः॥
 हुंकारिनिर्माणां वन्द्यादिर्नयकस्य
 ददमृद्विर्ज। क्षिगर्भनलधारा
 मम॥ ॥ इदं श्रुत्वा तनम॥

हुंॐ खल्वार्हो वावायवसुध
 धावशसविगार्धार्थयनुअह
 तमायकर्मभग्रायायधमद्या
 ॐद्यायरागमुजावगीननमी
 वाग्रायद्गामावधंनॐगीग
 माद्य०ॐआक्रयाग्निआय
 गिर्यागवदीयेऊमानश्रय
 धुन्यादि॥ ॥ दक्षिण्यद्वारागनी॥
 हुंअन्नग्रायादिवीगधद्यग

नो कथा दातव्यं निक्षिप्ता यस्याव
 द्दिषे ॥ ॥ यस्मिन्मन्त्रे द्यामर्चनीं
 हुं श्रुत्वा तदवी न हि ह्ययं मन्त्रः
 तद्विद्यया तथ ॥ शं व्याव हि ह्य
 बहुनाश ॥ ॥ इति मन्त्रः ॥
 यूनः पूजनी ॥

ॐ नमः शिवाय नमः ॥ अग्निना
 य नमः ॥ नमः शिवाय नमः ॥
 श्रीगुरुदेवे नमः ॥ नमः
 ॐ नमः शिवाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सिमवत्तद्विद्वादिनीं वा वाङ्
ॐ श्रीसमो दिभो ॥ अथ कर्त्तव्यं वि

पुष्पागद्वनयं नमः ॥

कुंभालयादि स्वाम्याहुदस्मा
नहुहुं दधानमसं नमः ॥
यद्वकसं ॥ आवशिवावमम
नसस्मर्यराजयगं नमः ॥
हुशानीदविमागनमः ॥ कस्मा
श्चनङ्गमामययस्मा कस्मादि
नमः ॥ अथाजनयथावनमः ॥
क्राशादकं नदध्यागद्वनयं ॥
वक्त्रद्वजनी ॥ वक्त्रं चाम ॥
वक्त्रं धनममः ॥ वक्त्रादयगं
नममः ॥ सुद्वंश्चानवस्थान
ममः ॥ वक्त्रागाममन

कुंभकयक्त्रनीयधर्मयन
सादि सीमगमसं नवस्थान

श्चावशसवश्चाहुदयमाश्च
याद्विक्तामसगंधयानिमस
गंधद्विव ॥

यथागद्वजनी ॥ विवर्त्तयामा
दिवर्त्तनममः ॥ यथागंधं नम
मः ॥ अश्चानममः ॥ अर्थावन्म
यनममः ॥ वक्त्रागाममन

कुंभं ददिवर्त्त ॥

कुंभद्वक्त्रावक्त्रावक्त्रवर्त्त
सीजायगामावाश्चनजयमः
नहुं यथागिद्याधामननमः
जायगंधाद्याधनधोराजय
नाहुमसिधमयनधियावा
दिवर्त्तनममः ॥ अथाव
ममजमानस्यावोभाजाय
गानिकाभनिकाभनममः
ल्लावर्त्तयुक्तुल्लवस्थानम
वयमयवर्त्तनीयामममनम

कल्यता ॥

दक्षिणावक्कास्ययनी ॥

शुंविष्णुननाटमसिद्धिष्णुः
अथुष्णुविष्णुः स्युनसिद्धि
कुरुवासिधुवेष्णुवमसिद्धि
युधत्वा ॥

उक्तवशावृत्तागस्त्ययनी ॥

यूनः वृजनी ॥ वृद्धाभानमः ॥

युजायगथनमः ॥ सर्वेश्वरः ॥

द्वारेश्वरानमः ॥

शुंवृक्षयज्ञनी ॥ सिन्धुनाशनी ॥

शुंदिष्णुवनमः ॥ वृत्तागयन

मः ॥ अश्वाभानमः ॥ अर्थावन्तः ॥

यनमः ॥

शुंविष्णुननाट ॥ ॥ सिन्धुनाशनी ॥

शुंकयानसिद्धिः ॥ अशुवद्वर्गीस

दावृत्तः सरवाकयाश्विद्व

यावृत्ता ॥ ॥ कल्यानयनिस्तन

तामः ॥ यथायथाविधिमन्त्रं
अकलसार्धमः ॥

अर्थयदासाधनीयः ॥

दक्षिणावक्कास्ययनी ॥
नयविश्वद्वनानि यविश्व
शक्यायार्थः अश्वाभानमः ॥

नृकलीसीमार्जुनैः ययम
नृकलीसुर्वोश्चकूटस्त्यल
मशालकृष्णश्विनसमिधः ॥

आश्विनिलस्त्यलः उदकः ॥
स्त्यग्न्यग्नेयमग्नेयान्तर्गनी ॥

शुंआगयागवस्तनैर्वाङ्ग
वाङ्गरुवामर्धः सरवावृत्तः
गथः ॥ ॥ विष्णुनिमात्मात्मे

नी ॥ शुंयविश्वद्विष्णुव्योसवि

शुर्वेश्वरसकटस्त्यनामश्चिद्व

यावविश्वअश्वयोस्मानसिद्धिः ॥

यविश्वद्वनानि ॥

हुं विष्णुवनाटमसीति ॥

यविण्वन्धनी ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

आकाशं यगर्थनी ॥

हुं समस्तं दृष्टिर्मोक्षमात्रं द

नदयाऽक्षुना सममुत्तमा

नदा ॥ यगस्यानाममुत्तमा

स्मिदिक्कादं वाना समुत्तमा

नाकिं ॥ ॥ उदकयुवनी ॥

हुं दधीनाया अग्रमुत्तमा अ

दवाग्रं ममययकन अग

प्रयकनयति ० सुभायैय क

यान्दवयवम् ॥

तिना दानं ॥ यवि यत्न ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

सुप्रसन्नवन्तं विष्णु ॥

हुं सवित्रं वरकंति ॥

आदिदं यत्पुष्टं वरकंति ॥

॥ अग्निं वरकंति ॥

हुं सवित्रं वरकंति ॥

मादिदं यत्पुष्टं वरकंति ॥

नभिदिक्कादं वाना समुत्तमा

हुं दधीनाया अग्रमुत्तमा अ

दवाग्रं ममययकन अग

प्रयकनयति ० सुभायैय क

यान्दवयवम् ॥

तिना दानं ॥ यवि यत्न ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥

हुं यत्पुष्टं वरकंति ॥